अनुभव कथन:- (ग्रहण- शक्ती)

यह उन दिनोंकी बात है, जब मोबाइल नही थे. अर्थात् जी पी आर एस भी नही था. हम नये शहर जानेके बाद, उधर के स्थानिक लोगोंकोही पता पुछकर मनचाही जगह पर जाते थे. ऐसेही एक बार मैं नाशिक शहरमें पहली बार गई थी. रेल्वे स्टेशनसे बाहर आयी तो सामनेही बस स्टॉप था. मुझे जिस जगह जाना था वह जगह (गंगापुर रोड) स्टेशनसे लगबग १४ कि.मी. दुरीपर थी. मैंने तिकीटबाबूसे पूछा व बसमें चढ़ गयी. मैंने उसे कहा, "मै पहली बार जा रही हु. मुझे जगह पता नही है, अथ: स्थानक आए तो मुझे बता दिजिये." उसने कहा ठीक है और वह अपने काममें जुड़ गया. मुझे बैठनेके लिए जगह भी मिल गयी. अगले स्थानकपर बहुत लोग चढ़ गए और बसमें भीड़ बढ़ गयी. मै थोडीसी तनावमें आ गयी. मैंने बाजूवाली सीट पर देखा, शायद वह मुझे बता दे, मगर वह लडकी अंधी थी. इसलिए मैंने सामनेवाली सिटपर बैठे हुए भाई साहबसे पूछा कि वह कहाँ उतरने वाले है और बिनती कियी की वह मुझे मेरा स्थानक बता दे.

मेरे शब्द सुनकर उस लडकीने कहा, " फ़िक्र न करो दीदी, मै बता दूंगी."

मैंने आश्चर्यसे मुड़कर उसकी और देखा और पूछा, "आप? आप कैसे बता पाओगी?"

वह:-(बडे विश्वासके साथ बोली) मै आपको सही बताउंगी. मै पिछले कई सालोंसे इस बससे सफर कर रही हु. वह भी मै पहले स्टॉप पर चढ़ती हु और आखिरी स्टॉप पर उतरती हु.

उसका आत्मविश्वास देखकर मै चौंक गयी. सच कहु तो मेरी बोलतीही बंद हो गयी. मै सिर्फ उसे देखती रह गयी. मेरे मनमें उसके अंधत्वके बारेमें शंका आ गयी. शायद उसको इस बातका पता चल गया. फिर उसने स्वयं:म आगे होकर बात चालू कियी. वही दिलचस्प बाते यहा आपको बता रही हु...

वह:- आपको पता है, जगह सिर्फ दिखतीही नही वह बोलतीभी है और उनका अपना गंधभी होता है. उनकी अपनी पहचान होती है, हम इसे अंदाज से समझ लेते है. इससे उन्हें जाननेमें आसानी हो जाती है.

मै:- मतलब? मै समझी नही. कृपया आप मुझे विस्तारसे बताओगी.

वह:- आप जैसे दृष्टीवालोको भी मालूम है यह बात. लेकिन शायद आपसे यह नजरअंदाज होती होगी.

मै:- क्या?

वह:- यही कि विश्व की हर चीज को अपनी आवाज होती है. रुको समझाती हु. (थोडी दर बाद) देखो बाहर, अब आनेवाले बस स्टॉप के पास एक मंदिर है.

मै:- हं ! आपने शायद सारे स्टॉप गिनकर नामके साथ याद रखे होंगे. या तो आप इस मंदिर में गयी होगी.

वह:- नही. न मै कभी इस मंदीरमें गयी और न मैंने कोई स्टॉप याद किये. फिर यह बस सिर्फ बस स्टॉप पर ही नही रुकती. कभी सिग्नल पर तो कभी यात्रीयोंके लिये भी तो रुकती है.

मै:- वरना आपको कैसे पता यहा मंदिर ह

वह:-इस जगह मंदिरकी घंटा सुनाई देती है. यहासे फुलोंकी खुशबूभी आती है. इसीसे मै जान गयी की यहा मंदिर होगा.

मै:- चर्चभी तो हो सकता है.

वह:- चर्चकी घंटा अलग बजती है.

मैं:- (मैने बाहर देखा, वहा मंदीर था) आपकी बात सही है. इसका मतलब जो बात हमें आंखे बता देती है, वही बात आपको कान और नाक बता देते है. यानि आपको तो हमसे दुगुना ज्ञान होगा.

वह:- (थोडा हसकर) हर चीज देखकर ही पता चलती है ऐसा नहीं. कुछ महसूसभी होती है. तर्क लगाना होता है. अगला बस स्टॉप स्कूलका है. यहा हमेशा बच्चोकी आवाज और स्कूलकी घंटा सुनाई देती है.

(बस आगे चलकर एक चौक में पुलिसवाले सिग्नल पर रुकी (यहा पर वाहनोंकी यातायात विद्युत् बत्ती के दियेसे नियंत्रित नही होती. यहा यातायात का पुलिस वाहनोंपर नियंत्रण करता है.))

मैं:- यह कौनसा बस स्टॉप है?

वह:- हं... आप मेरी परिक्षा ले रही हो. यह बस स्टॉप नही है. चौराहा है. यहा पुलिस सिग्नल देता है. उसके सिटीसे यहा गाडी चलती और रुक जाती है. यहा एकाद जन कभी कभी उतरता है मगर कोई नही चढता. (उस वक्त उस जगह बस कुछ ज्यादा देर रुकी.) वह :- आज यह देर करवाएगी.

मैने देखा उसने तो घडीभी नही पहनी थी. (ब्रेल घडी.जिसकी डब्बी खुलती है. और उसके काँटोंको छुकर अंधे वक्त जान लेते है)

मैं:- आपने तो घडी भी नही पहनी. आपको वक्त कैसे पता चलता है?

वह:- सूर्य-प्रकाश से. अब ९.३५ से ९.४० तक का वक्त हुआ है न घडीमें.

मैं:- (घडी देखकर) जी हा. अब ९.३७ हो रहे है. आपको कैसे पता?

वह:- यह सूरजके किरनोंका स्पर्श बता देता है. उसका तापमान बता देता है.

अब बस यहासे दाई ओर मुडेगी.वहा हॉस्पिटल है. उधर दवाईकी गंध आती है. आवाज नही आता और ना कोई उस क्षेत्रमें हॉर्न बजाता है.

अब मैने अपने जिंदगीके शिक्षाके बारेमें सोचा. ईश्वरने दिये हुये पंच-ग्रहण-इंद्रिय का उपयोग हम किस हद तक करते है और उनका सही उपयोग किस तरह किया जा सकता है? मै अपने सोचमें डुबी थी और उसको देख रही थी. बडे अचंबित नजरोंसे.

वह:- क्या हो गया दीदी? आप किस खयालोंमें खो गयी? इसके बाद एक केमिकल फक्टरीका बस स्टॉप है. वहा सिर्फ बद्बूही आती है. और गटारमें पानी गिरनेकी आवाज. इसके बाद बस बाई ओर मुडेगी. यहा उतरकर आपको रोड क्रॉस करना होगा. वहीसे गंगापूर रोड शुरू हो जाता है.

उसी वक्त तिकीट बाबुनेभी आवाज दी “गंगापूर -रोड”

मैने उसका बहुत आभार माना और बससे एक अंध व्यक्तीसे नयी दृष्टी लेकर उतर गयी. ईश्वर का शुक्रिया जिसने मुझे अंध व्यक्तीद्वारा लाभांकित किया.

अंध व्यक्तीकी दृष्टी